# गुरू-पूजा गीत

आओ हम सब अपने, गुरू को दिल में बसायें ।
सदगुरु के आदेशों पर, जीवन जीते जायें ॥
करें गुरूपूजा हम, करें गुरूपूजा हम
करें गुरूपूजा हम, करें गुरूपूजा हम ॥

सदगुरू ने चौरासी का, बन्धन तोड़ा है
बिछड़ी हुई इस रूह को, ईश्वर से जोड़ा है ।
बड़ी विशेष कृपादृष्टि की है, सदगुरू ने
जितना भी यश गायें, उतना ही थोड़ा है ॥
गुरू रिझायें, गुरू मनायें, सबकुछ गुरू पे लुटायें ॥
करें गुरूपूजा हम, करें गुरूपूजा हम.....

इस सदगुरू ने, ब्रह्मज्ञान की, ज्योति जलाई,
अपने लगते, हिन्दु–मुस्लिम-सिक्ख-ईसाई ।
इस दुनिया में, कोई नहीं है, बैरी-बेगाना
सच्चे दिल से माँगें, हरपल, सबकी भलाई ॥
गुरू रिझायें, गुरू मनायें, सबकुछ गुरू पे लुटायें ॥
करें गुरूपूजा हम, करें गुरूपूजा हम.....

पूर्ण नशाबन्दी, सादा शादी अपनायें
घर-संसार का सुन्दर, वातावरण बनायें ।
स्वस्थ-सबल-खुशहाल, बनें मानव समाज ये,
रक्तदान दें और प्रेम के, वृक्ष लगायें ॥
गुरू रिझायें, गुरू मनायें, सबकुछ गुरू पे लुटायें ॥
करें गुरूपूजा हम, करें गुरूपूजा हम.....

चाह रहा है सदगुरू, धरा को, स्वर्ग बनाना,
मानव जीवन में, फिर से, मानवता लाना ।
प्रीत–नम्रता-सहनशीलता और विशालता
के गहनों से, मानव मन को, "कपिल" सजाना ॥
गुरू रिझायें, गुरू मनायें, सबकुछ गुरू पे लुटायें ॥
करें गुरूपूजा हम, करें गुरूपूजा हम.....

तर्ज़ : छोड़ो कल की बातें.....(हम हिन्दुस्तानी)